

क्षत्रियों के कुलनाशक नहीं समाज संगठक थे भगवान परशुराम जी

प्रवीण गुरमनाबी-

शैशख शुल तृतीयान् अर्थात् अश्वयुतीया समाजान् हिंदू समाज की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण तिथि है। यह दिवस केवल हमारे सकल हिंदू समाज के आराध्य भगवान परशुराम के अवतरण का ही नहीं अपितु इसी दिन परमात्मा के हयग्रीव, नर नारायण और महाविद्या मातांभी अवतार का भी अवतरण दिवस है।

वस्तुतः यह दिवस मानव के जैविक विकास के क्रम में आधुनिक मानव के आदि पुरुष का आगमन दिवस है।

मृष्टि के विकास क्रम में मनुष्य ने यहां तक की यात्रा में अपना जैविक विकास क्रम पूरा किया था। भारतीय समाज की यही वैज्ञानिक तथ्य और समानता की यही श्रेष्ठताप्राप्ति सोच वाले और दोहरी मानसिकता वाले वामपंथियों को चुभती है।

समानता के ये विद्वान्, प्रारकभी, जनरलक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले नायक वामपंथियों को चुभते हैं। इस चुपन और विद्वेष का

ही परिणाम है कि ये कथित क युनिट, ये पंडितों, ये समाजवादीक हिंदू समाज के परस्पर तादात्य व प्रेम को समाप्त करने हेतु मनुष्य ने विद्वेष लेकर हमारे सकल हिंदू समाज को तोड़ने व हमारी सामाजिक समरसता को भंग करने हेतु का एक वितांड और भ्रमनाल ही है कि परशुराम ने इस धारा पर 21 बार क्षत्रियों का समूल नाश किया था। वस्तुतः सत्य यह नहीं है। सत्य यह है कि, कामधेनु के अहरण को लेकर उनसे संबंध में परशुराम के पिता सहस्त्राजुन का है। हैहयवंशियों ने युद्ध में वध कर दिया था।

इसके प्रतिशोध में परशुराम ने हैहय वंश के क्षत्रियों का 21 बार विनाश किया था।



यह युद्ध 21 बार किया गया था।

इस क्रम में भगवान परशुराम जी की शत्रुता सिर्फ महिष्मती के हैहय वंशी सहस्त्र अजुन से थी जो एक अहंकारी राजा था जिसके पुत्रों ने परशुरामजी के पिता का वध किया था। किंवदंती है कि हैहयवंशियों में परशुराम जी के पिता महर्षि जाम्बिन को युद्ध में 21 भागों में विभक्त कर मृत्यु दी थी।

हैहयवंशियों के वध की घटना भगवान श्रीराम से भी पहले की है अगर उससे पहले ही

तत्पश्चात् महाभारत में भी परशुराम जी व भीष्म के मध्य युद्ध का उल्लेख होता है। अगर पूर्व में ही क्षत्रिय समूल समाप्त हो गये होते तो महाभारत काल के अनेक क्षत्रिय वंश थे जो कहाँ से आते?

स्पष्ट है कि यह मिथक कि भगवान परशुराम जी द्वारा क्षत्रियों का 21 बार पूर्ण विनाश किया गया, यह कथा बाटमणों और क्षत्रियों में वैमनस्यता, विद्वेष व विषमता उत्पाने हेतु गढ़ी गई है।

इस सदर्भ में एक ऐतिहासिक तथ्य और भी है कि परशुराम जी ने हैहयवंश का भी समूल नाश नहीं किया था। सहस्त्राजुन के पुत्र का महिष्मती (आज का महेश्वर) में राज्यभित्तिक हुआ था और आज भी आज भी हैहय वंश के राजपूत बलिय जिले में मिलते हैं। हैहय वंश की शाखा कलसुरी राजपूत हैं जो आज भी छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में कलार समाज के नाम से सकल हिंदू समाज में आज महत्वपूर्ण

स्थान रखते हैं।

परशुराम जी को भगवान विष्णु का आवेशावतार कहा जाना भी उचित नहीं है।

वे आवेश, पराक्रम, अस्त्र शस्त्र के साथ ज्ञान, विवेक, बुद्धि व विज्ञान दृष्टि से भी संज्ञ, प्रज्ञ व विज्ञ थे। परशुराम जी ने समुची सामाजिक व्यवस्थाओं की स्थापना अर्थात्वंत के कोने कोने में की थी। उस कालखंड में जब समाज में आर्य एक उपाधि या गुणसूचक विशेषण हुआ करता था उन्होंने अनार्य,अपौरु, औप्राह, अवर्ण, सर्वर्ण, सभी को आर्यश्रेष्ठ बनाने का ऋचिव अचरण रखा हुआ था। आज से गोवा और केरल के भू-भाग तो परशुराम जी के फरसे द्वारा प्राप्त व पालित भूमि है। वस्तुतः परशुराम जी का फरसा केवल एक शस्त्र नहीं था अपितु यह कृषि एवं जीवन के अन्य क्रिया कलाओं में उपयोग होने वाला एक उपकरण था। इस उपकरण से ही उन्होंने मानव जाति को निवाम, कृषि व विकास हेतु

समुद्र से उपजाऊ भूमि निकालकर मानव विकास में महत्वपूर्ण कारक की भूमिका का निर्वहन किया था।

जहां हमारे पूर्वज व अराध्य श्रीराम की यात्रा उत्तर से दक्षिण की थी, श्रीकृष्ण की यात्रा पूर्व से पश्चिम की थी वहीं परशुराम जी समूचे अर्थात्वंत या ज बुद्धि में अपने विकास चिह्न छोड़ते हुए एक बड़ रहे थे। उड़ीसा का महेंद्रगिरी पर्वत उनकी तपोस्थली है।

महाराष्ट्र का रात्रागिरी कोकण, मध्यप्रदेश का महु तो छत्तीसगढ़ का सरगुज और उत्तरप्रदेश का शाजजपुर भी इनसे जुड़े पावन स्थल हैं। मध्यपूर्व के पुराने तुर्क गाथाओं से लेकर डोनेनेशियाई कावी रामकथा तक महेंद्रगिरी का शाजजपुर उल्लेख है। अनेक विद्याओं के प्रवर्तक इस युद्ध सैन्यासि परशुराम जी के जीवन में प्रेम भी प्रकटित हुआ था। समाज में विकास, परिवर्तन, संस्कार, समरसता व भगवद्गीता के आग्रही परशुराम जी अपने प्रेम को अगे नहीं बंद

पाए।

श्रीकृष्ण के हृदय में जो स्थान राधा का था वैसे ही परशुराम जी के अंतस में देवी लोमहांगिणी विराजमान थी।

हृदययाम लोमहांगिणी, अनुभिया व लोमपुडा जैसी देवियों के संग भावना परशुराम ने भारत में मातृशक्ति को वैवाहिक नेतृत्व भी दिया था।

अज अश्वयुतीया के दिन भारतभूमि के दम सनातनियों को यह भी समझना चाहिए कि हमारे मान विन्दुओं, अदर्शों व नायकों के सदर्भ में किस प्रकार के विराट, विरूपणा काय व विद्याक विषय समय समय पर प्रचारित किए जाते हैं। इन सबका लक्ष्य केवल एक ही होता है हिंदू समाज में समरसता को भंग करना। आज परशुराम जयंती, अश्वयुतीया पर शपथ लेनी चाहिए कि सामाजिक समरसता ही युष्मत् में है और निजमत् में नहीं, यही भगवान परशुराम जी द्वारा हमें प्रदान की गई है। लेखक विदेश मंत्रालय, भारत सरकार में राजभाषा सहायक हैं

मैं इनकी छाती पर मंगू दलंगा - दिग्विजय सिंह

भोपाल - जैसे जैसे चुनाव नजदीक आयेगे नेताओं की चुनौती जंग में वैना पन आयेगा। बुद्धका को उम्मीद की प्रस वार्ता के दौरान पूर्व मु यमंत्री दिग्विजय सिंह ने केंद्रीय मंत्री ज्योतिराव देवकार पर भाषण में जाकर सरकार गिराने के कारण निराशा सभ्ये हुए कहा था कि हे प्रभु, हे महाकाल दूसरा ज्योतिराव देवकार कोरिम में पैदा न हो, सिधिया ने भी द्यूटी कर पलटवारा किया था, भाजपा के मंत्री तुलसीराम सिंहवत, महेंद्र सिंह सिंसोदिया, केलास विजयवागीय ने भी दिग्विजय को बेरा था, किस्की ने पक्षिकतान में पैदा होने की तो किस्की ने मूत में पैदा होने की बात कही, केलास विजयवागीय ने तो दिग्विजय की मति प्रष्ट होना बला दी थी। अब देवकार दिग्विजय सिंह ने तीनों नेताओं को जवाब दिया है, मेरे खिलाफ बोलने के लिए कुछ नहीं दिग्विजय सिंह ने तीनों नेताओं के परतवार के सवाल पर हंसते हुए कहा कि मुहें हंसी आती है, उनके पास मेरे खिलाफ कहने की कुछ है नहीं, कोई कहला है पक्षिकतान चले जाओ, कोई चण्डा काग करे ला, ये लोग मेरे यहां ED, IB, CBI तो पैदा नहीं सकते, पक्षिकतान चण्डा की बात कर रहे हैं। दिग्विजय सिंह ने आगे कहा कि मैं ये घेन दू हूना हूँ, यही केल्ला, ना पक्षिकतान चण्डा, ना चण्डा, इनकी छाती पर मंगू दलंगा, केलास विजयवागीय ने कहा था कि मति प्रष्ट हो गई है उम्मेत आकर, जिस पर जवाब में दिग्विजय सिंह ने कहा कि इस्लामि ने बार-बार उम्मेत आर बला महाकाल, मता हरुदित, बबक काल पैर के साथ उमेत ना जो महाजय के दर्शन कर सक्, आपको बत दें कि दिग्विजय सिंह खर अश्वयुतीया वधेराया के शहर देम पुष्ककत के लिए पहुंचे थे, जहां वध कर कार्यकर्ताओं के साथ उन्होंने चर्च की और मोडिया से बातचीत भी की थी।

समता और समानता लाने की पहली पहल भगवान श्री परशुराम ने की - मु यमंत्री भगवान श्री परशुराम की जन्म-स्थली जानापाव में बनेगा श्री परशुराम लोक एवं धाम

मु यमंत्री ने जानापाव में की भगवान परशुराम की पूजा-अर्चना भोपाल - मु यमंत्री सिखराज सिंह चौहान ने कहा है कि समाज में समता एवं समानता लाने की सबसे पहली पहल भगवान श्री परशुराम ने की थी। उन्होंने सबको भूमि उलख कर देने की पहल भी की थी। उनके विचरों को आगे बढ़ाने के लिये हमने तय किया है कि मध्यप्रदेश में अब कोई भी गरीब आवासहीन नहीं रहेगा। उन्होंने कहा कि भगवान श्री परशुराम की जन्म-स्थली जानापाव में श्री परशुराम लोक एवं धाम बनाया जायेगा। साथ ही प्रदेश में ब्राह्मण कल्याण बोर्ड बनेगा। मु यमंत्री श्री चौहान इंदौर जिले के पूर्व विभागाध्यक्ष हैं।

मु यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि श्री परशुराम, भगवान श्री विष्णु के 6वें अवतार थे। धर्म की रक्षा एवं युद्ध के नाश के लिये उनका अवतार हुआ था। मध्यप्रदेश धाम एवं



विशाल राखी बहनो ने भेंट की

केंद्रीय इस्पात राज्य मंत्री फरमान सिंह कुतुबे ने कहा कि यह हमारे लिये गौरव का विषय है कि भगवान श्री परशुराम की जन्म-स्थली मध्यप्रदेश में है। यह खुशी का विषय है कि इसे तीर्थ के रूप में विकसित किया जा रहा है। संसद श्री बी.डी. शर्मा ने कहा कि भगवान श्री परशुराम की जन्म-स्थली जानापाव पुण्य-भूमि है। राज्य सरकार द्वारा इसे तीर्थ के रूप में विकसित कर लेनी से विकास कार्य करवाये जा रहे हैं। अखिलेश्वर ने लिये

सोस्रक, संत श्री हीरानंद सहित बड़ी सं या में उपस्थित थे।

मु यमंत्री को लाइली बहनो ने भेंट की विशाल राखी

मु यमंत्री श्री चौहान को इंदौर जिले के जानापाव पहुंचने पर लाइली बहनो ने विशाल राखी भेंट की। मु यमंत्री श्री चौहान ने सभी महिलाओं से आग्रह किया कि वे जानापाव में विशाल आभार मानें। मु यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि

मु यमंत्री चौहान ने मधुकर राव हर्णों को श्रद्धांजलि दी

भोपाल - मु यमंत्री सिखराज सिंह चौहान ने पूर्व मंत्री श्री मधुकर राव हर्णों के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी।

मु यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि श्री मधुकर राव हर्णों ने मध्यप्रदेश सरकार में मंत्री रहते हुए और अन्य दायित्वों का निर्वहन करते हुए आम जनता की भलाई के लिए सक्रिय भूमिका निभाई। मु यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मधुकर राव व्यंग्य विनोद भी करते थे। उनके परिचय का दायरा काफी व्यापक था। मु यमंत्री श्री चौहान ने स्व. मधुकर राव हर्णों द्वारा श्रेष्ठताम गीतों के गायन और ऐसी-टैको के साथ वाद्यों के अंडको को भी वाद किया।

मु यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि श्री मधुकर राव हर्णों ने समाज में अतिंत संस्कार किया जायेगा। उन्होंने धरम से स्व. मधुकर राव हर्णों की आत्मा की शांति और उनके परिजन को यह दुःख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना की है।

गुफा मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं के लिए बनेगा विशाल भवन - मु यमंत्री

भोपाल - मु यमंत्री सिखराज सिंह चौहान ने कहा है कि गुफा मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए विशाल भवन का निर्माण किया जाएगा। प्रदेश में ब्राह्मण कल्याण बोर्ड की स्थापना की जाएगी। भगवान परशुराम न्याय के देवता थे। उन्होंने अतारिणियों का नाश करने शत्रु उड़ा थे। उनकी प्रेणा से मध्यप्रदेश की धरती पर गुण्डे, बलासा और ने सलियों के लिहड से ल कार्यान्वही की जा रही है। प्रदेश में कक्षा 8वीं के पाठ्यक्रम में भगवान परशुराम के जीवन-चरित्र को शामिल करने, संस्कृत और कर्मकांड का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने और पुस्तकियों को मान्यत्व देने की व्यवस्था की गई है। प्रदेश में आवश्यकता पड़ने पर संस्कृत शिक्षकों को नियुक्त करने का कार्य किया जाएगा। साथ ही महिलाओं की भूमि के संबंध में आवश्यक अधिकांश भी रहेगी। मु यमंत्री श्री चौहान आज गुफा मंदिर परिसर भोपाल में योगेश्वर धाम के स्वामी शंदि कुंभ शाली महाराज जी के सान्निध्य में भगवान श्री परशुराम जन्मोत्सव पर अश्वयुतीया-2023 को संबोधित कर रहे थे। मु यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि भगवान परशुराम की जन्म-स्थली जानापाव में श्रीरक्षराम लोक का निर्माण किया जाएगा।

जाएगी। मु यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि श्री शंदि कुंभ सेंट, धर्म-प्रतिनिधि और बड़ी सं या में नारिक अर्चवर्तन, मु यमंत्री श्री चौहान ने इसके पूर्व लालापाटी चौराहा स्थित हुगो मंदिर पहुंच कर अश्वयुतीया पर पूजा अर्चना की। हुगो मंदिर से गुफा मंदिर परिसर तक सड़क यात्रा भी निकाली गई, जिसमें नारिकों ने पुण्य-वर्षा कर मु यमंत्री श्री चौहान का स्वागत किया। शोभायात्रा में बड़ी सं या में श्रद्धालुओं ने भागीदारी की।

के महंत मंगयवेश दास, चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग, सांसद विष्णु दत्त शर्मा, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पंचवीर, दिग्विजय रामेश्वर शर्मा, भोपाल महापौर श्रीमती

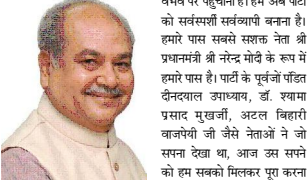
कार्यकर्ताओं के सुझाव पर आधारित चुनावी रोडमैप पार्टी के लिए लाभकारी - नरेंद्र सिंह तोमर

केंद्रीय मंत्री ने भोपाल नगर, ग्रामीण एवं सिरोहर जिले की बैठकों को किया संबोधित

सोहर/भोपाल। भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता आधारित देश में कार्यकर्ता पार्टी की असली ताकत है। यही कारण है कि आज पार्टी इस मुकाम पर पहुंची है। हम सबके समने 2023 में विधानसभा चुनाव एवं 2024 में लोकसभा चुनाव है। हमें भाजपा के पूर्वजों का सना साकार करना है। भाजपा के कार्यकर्ता के मन में देश सबके पहले और दल उसके बाद होता है। कार्यकर्ताओं के सुझाव पर आधारित चुनावी रोडमैप पार्टी के लिए लाभकारी होते हैं। यह बात केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने भोपाल नगर, ग्रामीण एवं सिरोहर जिले की बैठकों में संबोधित करते हुए कही।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने शनिवार को प्रदेश कार्यालय में आयोजित भोपाल नगर, ग्रामीण एवं सिरोहर जिले की बैठकों में संबोधित किया। उन्होंने पूर्व में सोहर जिले की बैठक में संबोधित किया। बैठक में केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने पार्टी के संसद, पूर्व संसद, विधायक, जनप्रतिनिधि एवं वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में आगामी चुनाव की दृष्टि से आवश्यक सुझावों पर चर्च की। भोपाल जिले की बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष एवं सभाप प्रभाती श्री

कांतरेव सिंह, प्रदेश महामंत्री श्री भगवानदास सक्सेनी, प्रदेश शासन के मंत्री श्री विश्वास सारंग, प्रदेश प्रशिक्षण प्रधारी श्री विजय दुबे भोपाल जिला प्रधारी श्री नरेंद्र सिंह यादव, जिला अध्यक्ष श्री सुमित पंचवीर, भोपाल ग्रामीण जिला अध्यक्ष श्री के.दरसिंह मंडलोई मंचारानी थे। सोहर की बैठक में प्रदेश प्रशिक्षण प्रधारी श्री विजय दुबे, जिला प्रधारी बबदुसिंह मुकती, जिला अध्यक्ष श्री रवि मालवीय, विधायक श्री करमसिंह चाम्वा, श्री सुदेश राय, श्री सुनुथारसिंह मणवी मंचारानी थे। श्री तोमर ने कहा कि कार्यकर्ता ही पहले माहौल बनाते हैं और उस माहौल से चुनाव को जीत में बदल देते हैं। आज प्रदेश की हीन देश में भी हमारी पूर्ण बहुमत की सरकार



केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने जो कैबिनेटका व्यवस्था की खुशआल है। हमारा लक्ष्य भारत को विश्वभूत बनाए और भारत माता को परम वैभव पर पहुंचाना है। हमें अब पार्टी को सर्वसम्प्री सहयोगी बनाना है। हमारे पास सबसे सशक्त नेता ही प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के रूप में हमारे पास है। पार्टी के पूर्वजों पिता दीनदयाल उपाध्याय, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, अटल बिहारी वाजपेयी की जैसे नेताओं ने जो सपना देखा था, आज उस सपने को हम सबको मिलकर पूरा करना है।



ब्राह्मण कल्याण बोर्डों को शांति स्थापना भगवान परशुराम की जन्म-स्थली जानापाव में बनेगा श्री परशुराम लोक परशुराम जी का जीवन-चरित्र अब पाठ्यपुस्तक में, संस्कृत अध्ययन पर प्रोत्साहन मु यमंत्री श्री चौहान भगवान श्री परशुराम जन्मोत्सव में हुए शामिल

